लिथुआनियाई परी कथा

स्प्रूस, घास के साँपों की रानी

चित्र: स्क्लूटौस्कजटे, हिंदी: अरविन्द गुप्ता

बहुत समय पहले, पुराने ज़माने में, एक बूढ़ा आदमी और एक बूढ़ी औरत रहते थे. उनके बारह बेटे और तीन बेटियाँ थीं जिनमें से सबसे छोटी बेटी का नाम स्प्रूस था.

एक गर्मी की शाम बहनें नहाने गईं. वे तैरकर इधर-उधर उछल-कूद करने लगीं, और फिर दिल भरने के बाद किनारे पर आईं और उन्होंने अपने कपड़ों की ओर हाथ बढ़ाया. स्प्रूस ने देखा, कि उसके कपड़े की आस्तीन में एक घास साँप लिपटा था! वो क्या करे? उसकी बड़ी बहन ने सांप को भगाने के लिए एक खूँटा उठा लिया, लेकिन घास का साँप, स्प्रूस की ओर मुड़ा और उसने मानवीय आवाज में कहा:

"स्प्रूस, मेरी प्रिय, मुझसे शादी करने का वादा करो और फिर मैं खुद ही कपड़े से बाहर निकलकर चला आऊंगा."

अब, इससे स्प्रूस की आंखों में आंसू आ गए, क्योंकि वह भला एक सांप से शादी कैसे कर सकती थी, इसलिए वह गुस्से में रोने लगी:

"बिना किसी शोर-शराबे के मुझे मेरा कपड़ा मुझे वापस दे दो और तुम जहां से आए हो, वहां चले जाओ!"

लेकिन घास का साँप जहाँ था वहीं रुका रहा और पहले की तरह बोला:

"मुझसे शादी करने का वादा करो और मैं खुद रेंग कर कपड़े से दूर चला जाऊंगा."

स्प्रूस को समझ में नहीं आया कि वो क्या करे. उसने हाँ कह दिया. फिर घास का साँप तुरंत उसके कपड़े से बाहर निकल गया और दूर चला गया.

तीन दिन बाद बड़ी संख्या में घास के सांप, बूढ़े दंपत्ति के सामने वाले आँगन में रेंगते हुए आए, जिससे हर कोई भयभीत हो गया. वे जबरन झोपड़ी में घुस गए और स्प्रूस और उसकी मां और पिता के पास आकर उन्होंने कहा कि वे मंगनी करने आए थे.

पहले तो दोनों बूढ़े लोग काफी क्रोधित और चकित हुए लेकिन सांपों ने उनकी कोई बात नहीं सुनी. लेकिन, यह जानकर कि स्प्रूस ने अपना वचन दिया था और इतनी बड़ी संख्या में सांपों का सामना करने पर, वे बहुत परेशान हो गए. वे चाहें या न चाहें, उनकी सबसे छोटी और सबसे सुंदर बेटी की शादी एक घास के साँप से होगी और वे इसके बारे में कुछ नहीं कर सकते थे.

हालाँकि, बूढ़े दंपत्ति ने शादी के लिए तुरंत अपनी सहमति नहीं दी. उन्होंने सांपों से झोपड़ी में इंतजार करने को कहा और वे खुद चुपचाप अपने एक बूढ़े पड़ोसी के पास चले गए और उन्होंने उसे सब कुछ बताया.

पड़ोसी ने कहा:

"घास के सांपों को मूर्ख बनाना आसान है, क्योंकि वे भरोसेमंद और अच्छे स्वभाव वाले होते हैं. अपनी बेटी के बजाए आप एक बत्तख को दुल्हन के कपड़े पहनाएं और उस बत्तख को सांपों को सौंप दें."

और उन्होंने बस यही किया. उन्होंने एक सफेद बत्तख को दुल्हन के कपड़े पहनाए, लेकिन जैसे ही मंगनी पक्की करने वाले सांप उसे लेकर चले, तभी भोजपत्र के पेड़ पर बैठे कोयल-पक्षी ने गाया:

"कोयल! कोयल!

तुम्हें धोखा दिया गया है.

तुम्हें एक बत्तख मिली है

एक लड़की की जगह."

घास वाले सांप क्रोधित हो गए, उन्होंने बत्तख को फेंक दिया. वे फिर वापस गए और उन्होंने सच्ची दुल्हन की मांग की. उसके बाद स्प्रूस के माता-पिता ने, अपने पुराने पड़ोसी की सलाह पर, एक सफेद भेड़ को दुल्हन के कपड़े पहनाए और उन्हें वो दे दी.

लेकिन जैसे ही घास के साँप अपने रास्ते पर चलने लगे, कोयल-पक्षी फिर से चिल्लाया:

"कोयल! कोयल!

उन्होंने तुम्हें नये सिरे से धोखा दिया गया है.

लड़की की जगह उन्होंने

तुम्हें एक भेड़ दी है!"

घास के साँप क्रोध से फुँफकारते हुए फिर लौटे और उन्होंने दुबारा सच्ची दुल्हन देने की माँग की.

इस बार उन्हें एक सफेद बछड़ा दिया गया, लेकिन कोयल-पक्षी ने उन्हें फिर से चेतावनी दे दी. इस बार सांपों का झुंड पहले से भी अधिक क्रोधित होकर वापस आया और अगर स्प्रूस के माता-पिता अपना वादा निभाने में असमर्थ रहे तो उन्होंने उन्हें सूखे, बाढ़ और भूख की धमकी दी.

माँ और पिता और उसकी बहनें और भाई, स्प्रूस के लिए रोए, लेकिन जब कुछ नहीं किया जा सका तो उन्होंने स्प्रूस को दुल्हन के कपड़े पहनाए और उसे घास के साँपों को सौंप दिया. स्प्रूस, घास वाले साँपों के साथ चली गई, और कोयल-पक्षी चिल्लाया:
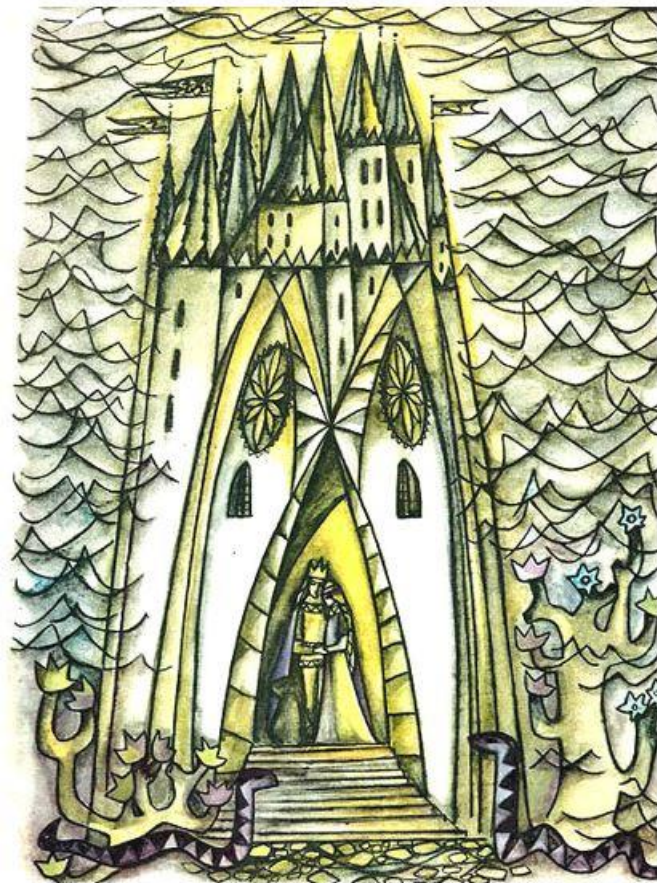
"जल्दी करो और घर जाओ

जहां घास के सांप रहते हैं:

क्योंकि वहाँ पर दूल्हा रहता है

जो बहुत देर से इंतज़ार कर रहा है."

स्प्रूस और उसके अनुरक्षक आगे बढ़ते गए और अंत में वे समुद्र के तट पर आए. वहां एक खूबसूरत युवक उनसे मिला और उसने स्प्रूस को बताया कि यह वही घास वाला सांप था जिसे स्प्रूस ने अपनी कपड़े की आस्तीन में पाया था.

वे तुरंत निकटतम द्वीप के लिए रवाना हुए और समुद्र के तल पर उतरे जहां एक समृद्ध महल खड़ा था. यहीं पर उनकी शादी हुई और उन्होंने अपनी शादी का आयोजन किया, और उन्होंने पूरे तीन सप्ताह तक शराब पी, दावत की और नृत्य किया.

महल कई सुंदर चीजों से भरा हुआ था और स्प्रूस ने वहां खुश महसूस किया. उसके दिल में एक शांति छा गई और जैसे-जैसे दिन बीतते गए स्प्रूस अपने माता-पिता और अपने पुराने घर के बारे में बिल्कुल भूल गई.
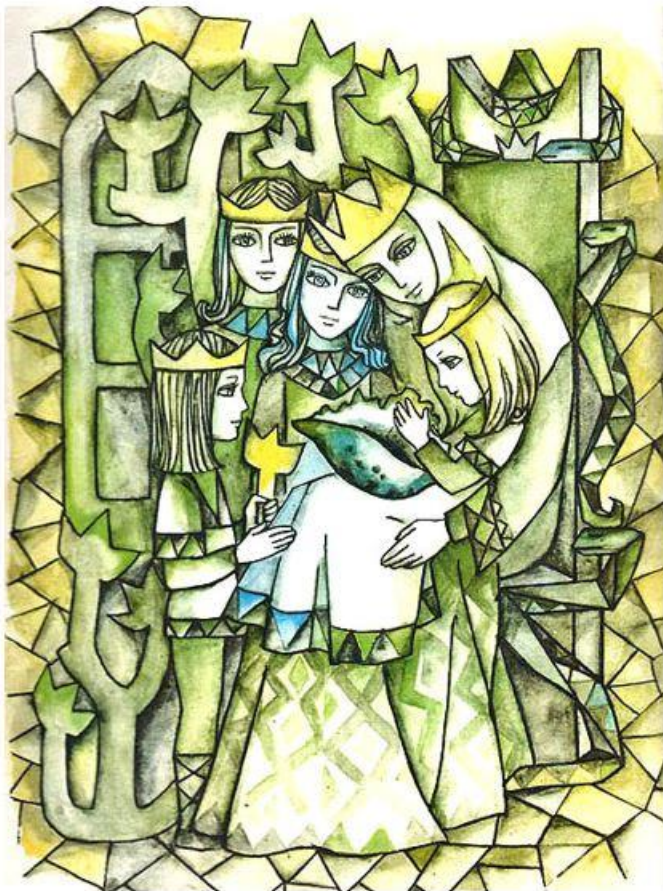
नौ साल बीत गए, और स्प्रूस के अब चार बच्चे थे - तीन बेटे, ओक, ऐश और बर्च, और एक बेटी, जो चारों में सबसे छोटी थी, जिसका नाम उसने लिटिल एस्पेन था.

एक दिन स्प्रूस का सबसे बड़ा बेटा, जो इधर-उधर भाग रहा था और शरारतें कर रहा था, वो अपनी माँ से पूछने लगा कि उसके नाना-नानी कहाँ थे.

"वे कहाँ रहते हैं, माँ?" उसने पूछा. "मैं उनसे मिलना चाहूँगा!"

तभी स्प्रूस को अपने माता-पिता और अपने पूरे परिवार की याद आई और वह सोचने लगी कि वे कैसे होंगे - वे जीवित होंगे या नहीं. वह उन्हें देखने की बड़ी लालसा से भर गई और उसने वो अपने पति से यह बात कही.

पहले तो घास के सांप ने उस पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया, लेकिन स्प्रूस ने उससे बार-बार विनती की फिर आखिरकार वह उसे जाने देने के लिए तैयार हो गया.

"केवल तुम्हें पहले मेरे लिए इस रेशम से कुछ सूत बनाना होगा," उसने कहा, और, उसे कुछ रेशम का रस्सा देते हुए, उसने एक चरखे की ओर इशारा किया.

स्प्रूस काम पर लग गई, वह दिन-रात काम करती रही, लेकिन रेशम का बंडल बिल्कुल छोटा नहीं हुआ. तब स्प्रूस को आभास हुआ कि घास का सांप उसे धोखा देने की कोशिश कर रहा था, क्योंकि वो जादुई रस्सी थी और चाहे वह कितनी भी कोशिश करे, वह उससे सूत नहीं कात सकती थी.

इसलिए वह एक बूढ़ी औरत, एक जादूगरनी, से मिलने गई, जो पास में ही रहती थी.

उसने विनती भरे स्वर में उससे कहा:

"कृपया, माँ, कृपया, मेरी प्रिय, मुझे दिखाओ कि इस रस्से को कैसे काता जाता है?"

"तुम्हें चूल्हा जलाकर रस्सी को आग में फेंकना चाहिए." बुढ़िया ने उससे कहा, "अन्यथा तुम उसके साथ कभी कुछ नहीं कर पाओगी."

स्प्रूस घर गई, और चूल्हा जलाया मानो कुछ रोटी सेंक रही हो, रस्सी को आग में फेंक दिया. रस्सी भड़क उठी और उसने एक बड़े मेंढक के आकार को आग की लपटों में कूदते हुए देखा, उसके ज्वलंत मुंह से एक रेशमी धागा निकल रहा था.

आग बुझ गई और मेंढक गायब हो गया, लेकिन चांदी जैसा धागा बना रहा.

स्प्रूस ने सूत छिपा दिया और फिर से अपने पति से उसे अपने माता-पिता से मिलने के लिए कुछ दिनों के लिए जाने देने के लिए कहा.

इस बार घास के सांप ने बेंच के नीचे से लोहे के जूतों की एक जोड़ी खींचकर निकाली.

उसने कहा, "जैसे ही तुम इन्हें पहन लोगी, तब तुम जा सकती हो."

स्प्रूस ने जूते पहने और चलना शुरू कर दिया और उनमें घूमना शुरू कर दिया और कुछ तेज पत्थरों पर उन्हें तोड़ने की कोशिश की. लेकिन जूते मोटे और मजबूत थे, और, चाहे उसने कितनी भी कोशिश की, वह उन्हें पहन नहीं सकी. वास्तव में, वो उन्हें बिल्कुल भी घिस नहीं सकी. फिर उसे लगा, वे जूते जीवन भर उसके साथ रहेंगे.

इसलिए स्प्रूस, बूढ़ी जादूगरनी से फिर से सलाह मांगने गई.

बूढ़ी औरत ने कहा, "जूतों को एक लोहार के पास ले जाओ, उसे उन्हें भट्टी में रखने दो और उन्हें सफेद गर्मी में गर्म करने दो."

स्प्रूस ने वैसा ही किया जैसा उससे कहा गया था, और एक बार जब जूते जल गए, तो उसने उन्हें तीन दिनों तक पहना और फिर से अपने पति से विनती करने लगी कि उसे उसके माता-पिता से मिलने जाने दिया जाए .

"बहुत अच्छा," उन्होंने कहा. "पहले केवल एक केक बेक करो, क्योंकि उपहार के रूप में कुछ अच्छा खाने के लिए ले जाए बिना किसी से मिलने जाना अच्छा नहीं होता है."

लेकिन पति ने महल के सारे बर्तन हटा दिए ताकि स्प्रूस को आटा मलने के लिए कोई बर्तन न मिले.

स्प्रूस बहुत देर तक अपने दिमाग में यह सोचने की कोशिश करती रही कि बिना बाल्टी के वो कुएं से पानी कैसे निकाले और बिना बर्तन के आटा कैसे मढ़े, लेकिन जब उसे कुछ भी नहीं सूझा तो वह फिर से बूढ़ी औरत से मिलने गई.

बुढ़िया ने कहा:

"किसी बर्तन से पानी निकालने की कोशिश न करो, बल्कि एक छलनी लो, उसके छिद्रों को ख़मीर से बंद करो और उसका उपयोग कुएं से कुछ पानी निकालो. उसी छलनी में आटा मढ़ो."

स्प्रूस ने वैसा ही किया जैसा उसे बताया गया था. उसने आटा मला, कुछ केक बनाए और अपने बच्चों के साथ जाने के लिए तैयार हो गई. घास के सांप ने उन्हें देखा, वह उन्हें किनारे पर ले गया और कहा:

"अपने माता-पिता के घर में नौ दिन से अधिक न रहना और दसवें दिन लौट आना. केवल बच्चों के साथ तट पर आना और किसी को अपने साथ नहीं लाना, और मुझे इस प्रकार पुकारना:

"यदि आप जीवित हैं, मेरे पति.

तब झाग सफेद और दूधिया होगा.

यदि आप मर गये होंगे, प्रिय.

तो झाग लाल और खूनी होगा."

“यदि समुद्र उबल उठे और उसका झाग दूधिया-सफ़ेद हो, तो तुम जान लोगे कि मैं जीवित हूँ; यदि वह उबल रहा हो और झाग रक्त-लाल हों, तो तुम जान लोगी कि मैं नहीं रहा. जहाँ तक तुम्हारी बात है, बच्चों, तुम सावधान रहना और जो कुछ तुम ने अभी सुना है वह किसी को नहीं बताना."

इतना कहकर उन्होंने उनसे विदा ली और उनकी सुखद वापसी की कामना की.

जब स्प्रूस अपने माता-पिता के घर में घुसी तो उसकी खुशी का कोई अंत नहीं रहा. उसके सभी रिश्तेदार और पड़ोसी उसे देखने आए और हर कोई यह जानना चाहता था कि क्या वह घास के सांप के साथ खुश थी. वह उनके सवालों का जवाब देने और उन्हें अपने जीवन के बारे में बताने में व्यस्त थी, और वे उससे दयालुता से बात करने और खाने-पीने के मामले में उसके साथ सबसे अच्छा व्यवहार करने में एक-दूसरे से होड़ लगा रहे थे.

स्प्रूस को पता ही नहीं चला कि दिन कैसे बीत गए.

इस बीच उसके माता-पिता और उसके बारह भाई-बहन अपना दिमाग दौड़ा रहे थे, यह सोचने की कोशिश कर रहे थे कि स्प्रूस को अपने साथ कैसे रखा जाए और उसे वापस घास के सांप के पास कैसे न जाने दिया जाए. आख़िरकार उन्होंने उसके बच्चों से यह पता लगाने का निर्णय लिया कि स्प्रूस उसे समुद्र के तल से कैसे बुलाएगी, क्योंकि तब वे वहां जा सकते थे, गहराई से फुसलाकर उसे बाहर निकाल सकते थे और फिर उसे मार सकते थे.

उसके भाई स्प्रूस के सबसे बड़े बेटे ओक को जंगल में ले गए, उसके चारों ओर एक घेरा बनाकर खड़े हो गए और उससे पूछताछ करने लगे. लेकिन लड़के ने दिखावा किया कि वह कुछ नहीं जानता था, और वे उसे धमकाते रहे, लेकिन वे उससे कुछ हासिल नहीं कर सके. फिर उन्होंने उसे जाने दिया लेकिन उससे कहा कि वह इस बारे में अपनी मां से एक शब्द भी न कहे.

अगले दिन वे ऐश को जंगल में ले गए और उससे पूछताछ की, और उसके अगले दिन बर्च से पूछताछ की, लेकिन उनमें से किसी से भी कुछ नहीं पता चला.

आख़िरकार वे स्प्रूस के सबसे छोटी बेटी, लिटिल एस्पेन को जंगल में ले गए. पहले तो उसने भी कहा कि उसे कुछ नहीं पता, लेकिन जब उन्होंने उसे पीटने की धमकी दी तो उसने पूरा राज उगल दिया.

तब स्प्रूस के बारह भाई अपनी तेज़ धार वाले हँसिये लेकर समुद्र के किनारे गए और चिल्लाए:

"यदि आप जीवित हैं, मेरे पति.

तब झाग सफेद और दूधिया होगा.

यदि आप मर गये होंगे, प्रिय.

तो झाग लाल और खूनी होगा."

उनकी बात सुनकर, घास का सांप समुद्र से तैरकर बाहर आया. तुरंत बारह भाई उस पर टूट पड़े और उन्होंने उसे अपनी हंसियों से काटकर मार डाला. उसके बाद वे घर वापस आए लेकिन उन्होंने स्प्रूस से इसके बारे में एक शब्द भी नहीं कहा.

नौ दिन बीत गए और स्प्रूस के जाने का समय हो गया. उसने अपने सभी रिश्तेदारों को अलविदा कहा, और अपने बच्चों के साथ समुद्र के किनारे जाकर चिल्लाई:

"यदि आप जीवित हैं, मेरे पति.

तब झाग सफेद और दूधिया होगा.

यदि आप मर गये होंगे, प्रिय.

तो झाग लाल और खूनी होगा."

इस पर समुद्र अँधेरा हो गया और गर्जना के साथ उबलने लगा, और स्प्रूस ने देखा और देखा कि लहरों पर जो झाग थे वे खून-लाल थे. अचानक उसने क्या सुना - उसके पति की आवाज़ उससे कह रही थी:

"यह आपके बारह भाई थे जिन्होंने मुझे हंसियों से मार डाला, और यह हमारी छोटी बेटी लिटिल एस्पेन ने मुझे धोखा दिया."

स्प्रूस का दिल दुःख और भय से भर गया. उसकी आँखों से आँसू बह निकले और, कायर लिटिल एस्पेन की ओर मुड़कर, उसने ये शब्द कहे:

"एक पेड़ बनो, एक डरपोक पेड़ बनो,

दिल की शांति कभी नहीं जानो, और हमेशा कांपती रहो.

बारिश तुम्हें बिना दया के सताए,

हवा तुम्हारे बालों को पागलों की तरह खींचे."

फिर, अपने बहादुर और वफादार बेटों को संबोधित करते हुए उसने कहा:

"तुम बड़े होकर महान वृक्ष और सुन्दर बनोगे,

स्प्रूस - तुम्हारी माँ सदैव तुम्हारे निकट रहेगी."

और जैसा उसने कहा वैसा ही हुआ.

ओक, ऐश और बर्च बड़े होकर ऊँचे और शक्तिशाली पेड़ बन गए और वे आज तक भी वैसे ही बने हुए हैं, लेकिन एस्पेन का पेड़ हल्की हवा के स्पर्श से कांपने लगता है और वो इसलिए है क्योंकि वह एक बार अपने मामाओं से इतनी डर गई थी कि उसने अपने ही पिता को धोखा दे दिया था.